तव मन्त्रकृतो मन्त्रैर्दूरात्प्रशमितारिभिः।

प्रत्यादिश्यन्त इव मे दृष्टलक्ष्यभिदः शराः ।।61।।

अन्वय तव दूरात् प्रशमितारिभि मन्त्रकृत मन्त्रै मे दृष्टलक्ष्यभिद शराः प्रत्यादिश्यन्त इव।

अनुवाद मन्त्रों की रचना अथवा प्रयोग करने वाले आप गुरु वशिष्ठ के उन मन्त्रों के कारण, जो दूर से ही (मेरे जाने बिना ही) मेरे शत्रुओं का विनाश कर देते हैं, प्रत्यक्ष लक्ष्य (निशाना) को बींध देने वाले मेरे बाण मानो निरर्थक हैं।

टिप्पणियाँ

मन्त्रकृत मन्त्रं कृतवान् इति मन्त्रकृत्, तस्य। मन्त्रों की रचना करने वाले वशिष्ठ के (मन्त्रों से) मन्त्रधातु कृ क्विप्, तुक् (''सुकर्म्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः'' इस सूत्र से क्विप्)।

दूरात् प्रशमितारिभिः प्रशमिताः अरयः, तैः प्रशमितारिभिः (बहुव्रीहि) दूरात् तथा।

वे मन्त्र जो दूर से ही शत्रुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य रखते हैं। दूर से ही नष्ट कर दिए हैं शत्रु जिन्होंने, ऐसे मन्त्रों से।

प्रत्यादिश्यन्ते प्रति आ धातु दिश .कर्मणि लट्, अन्य पुरुष; तिरस्कृत, पराजित हो जाते हैं।

दृष्टम् (दृश् क्त) दृष्टं च तत् लक्ष्यम् इति दृष्टलक्ष्यम् (कर्मधारय), दृष्टलक्ष्यं भिन्दन्ति इति दृष्टलक्ष्यभिदः (उपपद तत्पुरुष)। ''**शराः**'' का विशेषण। (मेरे वे तीर) जो केवल

दिखाई देने वाले लक्ष्य को ही बींध सकते हैं (परन्तु वशिष्ठ के मन्त्र अदृश्य लक्ष्य को भी नष्ट कर सकते हैं)।

विशेष प्रस्तुत श्लोक में द्वितीय वशिष्ठ की महिमा का बखान कर रहे हैं। राजा के बाण तो केवल ऐसे ही लक्ष्य को बींध सकते हैं जो आँखों से देखा जा सके या जिसका शब्द कानों से सुना जा सके। परन्तु वशिष्ठ के मन्त्र अद्‌भुत वर्चस्वयुक्त हैं। उनकी इस दिव्यशक्ति के कारण राजा के तीर व्यर्थ-से हो गए हैं क्योंकि शत्रु-नाश का जो कार्य राजा के तीर करते हैं वह वशिष्ठ ऋषि के मन्त्र ही परोक्ष में कर देते हैं। अतः राजा को शत्रुओं के नाश के लिए अपने धनुष पर बाण ही नहीं चढ़ाना पड़ता। इस प्रकार वशिष्ठ के मन्त्रों की शक्ति के कारण दिलीप के बाण जैसे व्यर्थ बन गए हैं।